भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण : 21वीं सदी के विशेष सन्दर्भ में

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
के अन्तर्गत राजनीतिक शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ० अंजलि सेठ
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी
सन्जू कुमारी

समाज शास्त्र एंव राजनीतिक विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा– 282005

2020

प्रस्तावना :— राजनीतिक भागीदारी प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था का मुख्य अंग है। राजनीतिक भागीदारी मनुष्य को सशक्त बनाने में मदद करती है और उसे राजनीतिक व्यवस्था से जोडती है। राजनीतिक भागीदारी का अभिप्राय केवल राजनीतिक दलों में भाग लेना ही नही है बल्कि नागरिकों का सार्वजनिक या दल कार्यालयों में काम करना, चुनाव में भाग लेना, राजनीतिक बैठकों या रैलियों में भाग लेना, किसी दल या उम्मीदवार को वित्तिय योगदान देना, सार्वजनिक अधिकारी से संपर्क करना, राजनीति के प्रति जागरूक करना, राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेना, मतदान, राजनीतिक उत्तेजनाओं को उजागर करना। इन सभी तरीकों से आम नागरिक भी राजनीति में भाग लेते है। परन्तु इसके साथ ही विश्व की राजनीतिक व्यवस्था में असमानता विद्यमान है (Pattanaik : 19)। स्त्री व पुरुष के बीच भेदभाव को लैंगिक असमानता कहा जाता है। भारत में महिलाएं भेदभाव का शिकार रही है जिसका मुख्य कारण हमारे समाज में पुरुष प्रधानता है। जिसके चलते महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक इत्यादि समानता से वंचित रखा गया जाता है। और परम्परागत रूप से समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता है (Sen 2002 : 231)। स्वतन्त्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय लोकतन्त्र के आधार है, जो लोगों के समक्ष चुनौतियों को मिटाने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लैंगिक असमानता को नियन्त्रित करने हेतु सरकार महिलाओं के राजनीतिक विकास और उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास कर रही है। और कानूनी दृष्टि से सरकार संविधान और संशोधन दोनों के माध्यम से महिलाओं के साथ है। संविधान के 73वें संविधान संशोधन के साथ–साथ इस सभी प्रयत्नों के काफी सकारात्मक परिणाम सामने आये है। जैसे स्थानीय शासन संख्याओं व निर्णय निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि देखने को मिली है। जेण्डर गैप रिपोर्ट के अनुसार राजनीतिक भागीदारी में भारत का 18वॉ स्थान रहा है। लेकिन भारतीय राजनीति में आज भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अत्यधिक कम है। रिपोर्ट में प्रस्तुत आंकडों के अनुसार केवल 14 प्रतिशत महिलाएं ही संसद तक पहुँची है। मंत्रिमण्डल में महिलाओं की भागीदारी केवल 23 प्रतिशत ही है। जेन्डर गैप रिपोर्ट के अनुसार भारतीय राजनीति के पिछले वर्षों में अनेक महिलाओं ने राजनीति में सर्वोच्च भागीदारी निभायी है। (इंदिरागाँधी, मायावती, ममता वनर्जी, जयललिता आदि) रिपोर्ट के आंकडों के अनुसार विश्व के विभिन्न देशों में 25.2 प्रतिशत महिलाएं संसद के निचले सदन का भाग है, जब कि 21.2 प्रतिशत महिलाएं मंत्रिपद पर है, जो कि पिछले वर्षों के अनुपात (24.1

प्रतिशत और 19 प्रतिशत) से बेहतर है। और महिला साक्षरता में भारत की स्थिति अत्यन्त खराब रही हैं, पुरुषों की तुलना में (82 प्रतिशत साक्षर) केवल दो तिहाई महिलाएं ही साक्षर हुई है। जेन्डर गैप रिपोर्ट से यह भी पता लगा है कि 2006 में पहली बार प्रकाशित आंकडों की तुलना में आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के अवसर में कमी आयी है। 153 देशों में किये गये सर्वे के अनुसार भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत राजनीतिक क्षेत्र से कम है (Weforum.org : 2018)। लैंगिक असमानता को नियन्त्रित करने हेतु सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (MDGs) 18 लक्ष्यों और 8 अन्तर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों का एक समूह था, जो 2000 में संयुक्त राष्ट्रों के सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन द्वारा निर्धारित किया गया था। जिसमें गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, मानव अधिकारों और कमजोर लोगों की सुरक्षा जैसे मुद्दे पर विचार–विमर्श किया गया। सितम्बर 2000 में 189 देशों के नेताओं ने ऐतिहासिक मिलेनियम घोषणा पर हस्ताक्षर किये और सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (MDGs) को अपनाया। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (MDGs) की विफलता के पश्चात् सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की स्थापना हुई एंव 25 सितम्बर 2015 को सतत विकास शिखर सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्यों ने सतत विकास के लिये 2030 एजेंडा को अपनाया हैं (Mishra 2011 : 23)। सतत विकास को एक ऐसी अवधारणा के रूप में परिभाषित किया गया है, जो भविष्य की पीढियों की आवश्यकताओं को पूरा किये बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है। 25 से 27 सितम्बर 2015 से न्यूर्याक में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में 17 सतत विकास लक्ष्यों का निर्णय किया, जो 1 जनवरी 2016 को लागू हुआ। SDGs को MDGs के आधार पर बनाया गया जो की MDGs के विपरीत है, MDGs केवल विकासशील देशों के कार्यवाही तक ही सीमित था। परन्तु सतत विकास लक्ष्य सभी विकसित व विकासशील देशों पर लागू होता है। यह लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राप्त करना चाहता है। और लैंगिक समानता के बिना सतत विकास हासिल नही किया जा सकता (Govinda 2020)। सतत विकास (SDG) स्थायी विकास के तीन आयामों पर आधारित हैः आर्थिक विकास, सामाजिक समावेश, और पर्यावरण संरक्षण। इन्हे प्राप्त करने के लिये लैंगिक समानता व महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत ने प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर लैंगिक समानता प्राप्त की है और शिक्षा के सभी स्तरों में समानता प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहे है (Chaturvedi 2019 : 3)।

भारत सरकार द्वारा महिलाओं के प्रति हिंसा को समाप्त करने के लिए कार्यक्रम शुरू किये जिसमें 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ', एंव महिलाओं के रोजगार से सम्बन्धित कई प्रयास किये गये है। यह सभी प्रयास सतत विकास लक्ष्य (SDG 5) लैंगिक समानता के उद्देश्यों के प्रति संकल्प को आगे बढाते है। केन्द्र सरकार द्वारा सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन की देखरेख एंव समन्वय की जिम्मेदारी नीति आयोग को सौंपी गयी है (UN 2012)।

सैद्धांतिक रूपरेखा :–राजनीतिक व्यवस्था में लोगो की भागीदारी महत्वपूर्ण है। राजनीतिक भागीदारी लोकत्रान्त्रिक समाज मे होती है, जहाँ वयस्क मताधिकार, स्वतन्त्रता, समानता, संप्रभुता आदि होते है। अब्राहम लिंकन ने लोकतन्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "लोकतन्त्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन है"। लोकतन्त्र में जनता ही सत्ताधारी होती है, उसकी अनुमति से ही शासन होता है। राजनीतिक भागीदारी से आशय यह है कि व्यत्ति का नीति व निर्णय निर्माण, निधारण, एंव कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से भाग लेना और राजनीति में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप के भाग लेना राजनीतिक भागीदारी कहलाती है।विश्व की आबादी का लगभग 50 प्रतिशत महिलाएं है। इसके बावजूद समाज में नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता है। नारी सशक्तिकरण से अभिप्राय यह है कि महिलाएं पारिवारिक बन्धनों से मुक्त होकर अपने व अपने देश के प्रति योगदान दे या कदम बढाये। राजनीतिक भागीदारी के विषय में राजनीतिक विचारकों ने अपने अपने तर्क दिये है। अरस्तु ने अपनी पुस्तक 'Politics' में नागरिकों को इस रूप मे परिभाषित किया कि वह नगर राज्य के निर्माण के सार्वजनिक उद्देश्य के लिए निर्णय व शक्ति प्रयोग मे सहभागिता के योग्य है। उन्होने भागीदारी को सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति का साधन माना है। जे. एस. मिल ने नैतिक पहलू पर बल देते हुए राज्य को मानवीय विकास का साधन तथा मताधिकार को जनता के बैद्धिक, नैतिक, तथा मानवीय विकास का महत्वपूर्ण माध्यम बताया (Lockwood, Samaras, 2015)। राजनीतिक भागीदारी का "विकास सिद्धान्त" को शास्त्रीय ग्रीक दार्शनिक अरस्तु द्वारा वकालत की और बाद में जे. एस. मिल ने आकार दिया। राजनीतिक भागीदारी को मानव क्षमताओं के विकास का एक अनिवार्य हिस्सा बताता है। इस सिद्धांत के अनुसार राजनीतिक भागीदारी और नैतिक शिक्षा की एक प्रक्रिया का हिस्सा है। राजनीतिक भागीदारी पुरुषों को उनकी खुद की गरिमा और मुल्य की भावना देकर सक्षम बनाती है। विकासात्मक सिद्धान्तकारो का

मानना है कि राजनीति में भागीदारी एक अधिकार से अधिक है और देश की सेवा करने के दायित्व के बराबर है, यह आत्म विश्वास का साधन है। विकासात्मक दृष्टिकोण दोनों का वर्णन है कि व्यक्ति राजनीतिक हितों, ज्ञान, और आत्म प्रभावकारिता की भावना के साथ राजनीतिक भागीदारी में प्रमुख भागीदारी निभाते है (Geraint, P. 1972 : 28)। लॉस्की ने राजनीतिक समानता व अधिकारो के साथ आर्थिक समानता को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। रूसो के अनुसार, "इच्छा की धारणा मे जनता की राजनीतिक भागीदारी का विचार निहित है" (J.J Russeau, 2018)। टी. एच. ग्रीन ने सामान्य हित की सिद्धि को महत्ता प्रदान की। सी. वी. मेकफर्सन के अनुसार, "सामाजिक समानता व जागरूकता के अभाव मे लोकतान्त्रिक भागीदारी का विकास सम्भव नही है, परन्तु लोकतान्त्रिक भागीदारी के अभाव मे सामाजिक समानता व जागरूकता प्राप्त नही की जा सकती" (Sanger 2008 : 315)। भारतीय राजनीतिक चिन्तन मे प्राचीन ग्राम पंचायत की धारणा, गाँधी जी के ग्राम स्वराज तथा एम. एन. राय व जय प्रकाश नारायण की जनसमितियों की धारणा लोकतन्त्र मे जनता की भागीदारी के विचार के समर्थक थे। सिडनी वर्बा ने राजनीतिक भागीदारी को आम लोगों की वे विधिसम्मत गतिविधियां माना है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक पदाधिकारियों के चयन और उनके द्वारा लिए जाने वाले निर्णय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करना होता है। आमण्ड एंव पावेल ने राजनीति को व्यापक संकल्पना माना है। उनके अनुसार राजनीतिक भागीदारी में दलों व समूह की भूमिका को सम्मिलित किया जा सकता है। राजनीतिक दल एंव संगठन राजनीतिक भागीदारी के प्रति नागरिको में जागरूकता उत्पन्न करने के माध्यम ही नही बल्कि इनसे व्यक्ति का राजनीतिकरण भी होता है (Okin S. M, 1979 : 99-274)। नारीवादी सिद्धान्त लैंगिक असमानता एंव महिलाओं के अधिकारों पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करता है। नारीवाद महिलाओं के लिये समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों को स्थापित करने व समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से आंदोलनों का एक समूह है। नारीवाद के अनुसार लैंगिक असमानता का कारण पितृसत्ता (पुरुष प्रधानता) है। और स्त्री पुरुष के मध्य असमानता न प्राकृतिक है और न ही आवश्यक है, इसी लिये असमानताओं में परिवर्तन सम्भव है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 से 18 में समानता के अधिकार एंव अनुच्छेद 33 (क) में लोकसभा में महिलाओं के लिये आरक्षण की व्यवस्था, अनुच्छेद 332 (क) में राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिये आरक्षण का उल्लेख किया है। उदारवादी नारीवाद के

समर्थक जेरेमी बैंथम ने 1781 मे अपनी पुस्तक (Introduction to the Principles of Morals and Legislation) में स्त्रियों को उनके मंदबुद्धि का बता कर अधिकरों से वंचित करने की कई राष्ट्रों की इच्छा की आलोचना की। उन्होंने नारी को मतदान देने के अधिकार, सरकार में भागीदारी के अधिकार की वकालत की। मैरी वोल्स्टनक्राफ्ट ने अपनी पुस्तक (Vindication of the First of Women) में लैंगिक समानता से सम्बन्धित तर्क दिया है कि, "मनुष्य विवेकशील प्राणी है" मनुष्य के नाते स्त्रियाँ भी विवेकशील प्राणी हैं और विवेकशील प्राणी के अनुरूप उन्हे भी पुरुषों के समान स्वतन्त्रता और आत्म–निर्णय का अधिकार है। वह समान शिक्षा की वकालत करती है। यदि स्त्रियों को उपयुक्त शिक्षा दी जाये, पूर्ण नागरिक अधिकार प्रदान किये जायें, कानूनी तौर पर उन्हें अपने पति से स्वाधीन माना जाये और अपनी योग्यता का प्रयोग करने में स्वतंत्र हो तो वे समाज की पूर्ण सदस्य बनने के लिए सक्षम हो जाएँगी। मैरी वोल्स्टनक्राफ्ट को विश्वास था कि जब तक स्त्री–पुरुष के मध्य असमानता कायम है, तब तक सामाजिक न्याय के लक्ष्य को पूरा नही किया जा सकता। जे. एस. मिल की पुस्तक (The subjection of women, 1873) में उल्लेख किया है कि, पुरुष के प्रति स्त्री की अधीनता न केवल अपने आप में अनुचित है, बल्कि यह मानव जाति की उन्नति के मार्ग की बाधा भी है। इसी लिए सामाजिक प्रगति को बढावा देने के लिए स्त्रियों की पराधीनता को समाप्त करके स्त्री–पुरुष की पूर्ण समानता स्थापित कर देनी चाहिए। सिमोन द बोउवार ने अपनी पुस्तक (The Second Sex, 1949) में लिखा है कि, "औरत पैदा नही होती, बल्कि बना दी जाती है।" केट मिलेट की पुस्तक (Sexual Politics) के अन्तर्गत यह तर्क दिया गया है कि, स्त्री पर पुरुष का नियंत्रण लगभग विश्वजननी स्तर पर पाया जाता है। वह उनके जीववैज्ञानिक अन्तर की देन नही है, बल्कि वह सामाजिक संरचना का परिणाम है जिसे पितृतंत्र की संज्ञा दी जाती है (Meehan, E. 1992: 54-240)।

साहित्य पुनर्विलोकन :– शोधकर्ता को अपनी शोध समस्या के चयन, परिकल्पना के निर्माण और अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने के लिए ठोस आधार की आवश्यकता होती है। यह ठोस आधार पुस्तको, पत्र पत्रिकाओं, अभिलेखों तथा पूर्व मे सम्पन्न हुए शोध परिणामों से प्राप्त होता है। इसके लिए शोधकर्ता को साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है। और प्रस्तुत अध्याय से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का प्रयास किया गया है, जो इस प्रकार हैः–

(Forbes 1979) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य स्वतन्त्रता पूर्व ब्रिटिशकालीन भारतीय राजनीति में लैंगिक समानता का विश्लेषण किया है। लेखक का मानना है कि ब्रिटिश काल से पहले भारतीय राजनीति में कोई भी महिला नही थी परन्तु 1937 के बाद भारतीय राजनीति में बदलाव आया जिसका श्रेय उन तीन राष्ट्रीय महिला संगठनों (महिला भारतीय संघ, भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद, और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (1917–1927) को जाता है, जिन्होंने महिलाओं के मतदान की माँग को उजागर किया और समर्थन किया। और इन संगठनों ने भारत की महिलाओं के लिए बोलने के अधिकार की माँग की जिसके चलते महिलाओं को प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया गया। दूसरे गोलमेल सम्मेलन में गाँधी जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में गए और सरोजनी नायडू के साथ अनेक महिलाओं ने महिलाओं के लिए वयस्क मताधिकारों और समानता की माँग की। लेखक द्वारा बताने का प्रयास है कि महिलाओं के लिए वोट की पहली माँग भारत में रहने वाले ब्रिटिश मताधिकार से बहुत प्रभावित थी, दूसरी माँग गांधी जी द्वारा भारत की स्वतन्त्रता के लिए की गयी। लेखक का मानना है कि महिलाओं को राजनीति में प्रतिनिधित्व होना चाहिए और मतदान और चुनावों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर होना चाहिए।

(Chopra 1993) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य भारतीय संसद में उन महिलाओं की संख्या प्रस्तुत करते है, जो 1950 से लेकर 1989 मे चुनी गयी थी। और महिलाओं के विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए इस पुस्तक को छः अध्याय में प्रस्तुत किया है जिसके अन्तर्गत उन्होंने भारतीय महिला आंदोलन की विचारधारा, महिलाओं के उत्थान तथा महिला व पुरुष दोनों समान अधिकार के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला है। और महिलाओं के लोकसभा एंव राज्यसभा में प्रतिनिधित्व एंव सामाजिक, आर्थिक पृष्टभूमि और राजनीति में उनके अनुभव के कारणो का विश्लेषण किया है। लेखक द्वारा महिलाओं के उत्थान हेतु विभिन्न उपायों के कार्यान्वयन पर ध्यान केन्द्रित किया है। और विश्लेषण से यह पता चला है कि स्वतन्त्रता पूर्व भारतीय महिला आन्दोलन में शहरी शिक्षित परिवारों की महिलाओं की भागीदारी देखने को मिलती है। लेखक द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि केवल कुछ महिलाएं ही थी जो अपने बलभूते पर राजनीति में शामिल हुई हैं।

(Mahapatra 2001) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य महिला एंव पुरुषों के मध्य समानता लाने की पुष्टि करना है। एंव उनके बीच होने वाले भेदभाव को समाप्त करना है। द्वितीय स्त्रोतो (पुस्तक, जनरल्स) का प्रयोग किया है। यह पुस्तक छः अध्याय में विभाजित है जिसमें परिचय, सामाजिक–राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाएं, विचारों और आदशों में परिवर्तन, दक्षिण भारतीय राजनीति में महिला मुद्दे, राजनीति में महिलाओं की स्थिति का परिर्वतन और महिला प्रतिनिधित्व एंव नेतृत्व। लेखक का कहना है कि लिंग के आधार पर भेदभाव एक विश्वव्यापी घटना है। राजनीति के क्षेत्र मे महिला प्रतिनिधित्व होते हुए उन्हे पुरुषों के अधीन माना जाता है। लेखक ने राजनीतिक और महिलाओं के बीच दो विषय को जोडा है। पहला, राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका और राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं के साथ किया जाने वाला व्यवहार। भारतीय राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं पर अध्ययन गंभीर रूप से सीमित है, जैसे चुनावी प्रक्रिया में मतदाताओं, उम्मीदवारों, विधायिका के सदस्यों के रूप में और दूसरा स्वतन्त्रता आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका पर अध्ययन।

(Kudva 2003) लेखक का उद्देश्य कर्नाटक के पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं का अनुभव किया है। इस अध्ययन में पंचायती राज में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और तीन स्तरीय स्थानीय सरकार प्रणाली, जिसमें चुनावों में लिंग कोटा का नेतृत्व किया। लेखक द्वारा सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत लेखक का मानना है कि विभिन्न स्तरों पर महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है। और महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में एकजुटता विकसित करनी होगी एंव समाज में परिवर्तन लाने और समानता लाने के लिए बाधाओं का सामना करना होगा। लेखक का मानना है कि सरकार का लक्ष्य पंचायती राज सहित राजनीति ढांचे के सभी स्तरों पर लैंगिक समानता को खत्म करने के लिए राजनीतिक व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना व समर्थन करना है। यह अपेक्षा की जाती है, कि यदि राजनीति में महिलाओं की वृद्धि होती है तो यह सरकारी संस्थाओं की प्रकृति और कार्यप्रणाली को स्थानांतरित कर देगी, जो हमारे समाज में लैंगिक पक्षपात को मिटाकर भविष्य की प्रगति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। और अधिक न्यायसंगत और मानवीय संरचना को बढ़ाएगी। अध्ययन से यह पता चलता है की राजनीतिक प्रतिबद्धता में वृद्धि महिलाओं को प्रमुख

बनाती है, इससे निश्चित रूप से राजनीतिक प्रणली में भ्रष्टाचार का स्तर कम हुआ है और महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधि की आत्मनिर्भरता बढ़ी है।

(Goetz 2004) लेखक का उद्देश्य महिलाओं के लिए राजनीतिक शिक्षा की सिफारिश करना है। लेखक व्यक्तिगत और सामूहिक राजनीतिक प्रभावशीलता से जुड़े कई कारको के बीच शिक्षा के महत्व का आकलन करते है। लेखक द्वारा द्वितीय स्त्रोतो के प्रयोग करते हुए सांख्यिकीय विश्लेषण करते है। और स्थानीय सरकार के स्तर पर अपने हितो को आगे बढ़ाने में महिलाओं की शिक्षा पर विचार करते है। जिससे विश्व के देशों में महिला प्रतिभागीयों की संख्या में वृद्धि पायी गयी है। लेखक का विचार है कि औपचारिक शिक्षा में राजनीतिक ज्ञान शामिल होना चाहिए और इसके प्रत्यक्ष परिणामों में सूचना का अधिग्रहण शामिल है एंव कौशल विकास राजनीतिक विश्लेषण में प्रशिक्षण के लिए आवश्यक है।

(Ghosh & Rewal 2005) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता, और मुंबई में महिलाओं के आरक्षण के कार्यान्वयन हेतु अनुभविक अध्ययन किया। इसके दौरान लेखक का मानना है कि भारत के शहरों में एक महिला पार्षद होना गर्व की बात है। और महिलाओं की भूमिकाओं एंव उनके प्रदर्शनों के अवसरों पर विशेष रूप से नगर निगमों में महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित किया है। सामान्य रूप से विकेंद्रीकरण पर विचार करने और आरक्षण को विशेष रूप से लोकतंत्रीकरण में एक प्रयोग के रूप में लेखक उपयोगी अन्तदृष्टि प्रदान करते है और यह अनुभव करते है कि राजनीति में महिलाओं के स्तर में कितनी वृद्धि हो सकती है। इस पुस्तक के आधार पर मेरे विचार यह है स्थानीय शासन में महिलाओं को आरक्षण की व्यवस्था की गयी है जिससे आज की महिलाएं उसका उपयोग कर रही है। यदि सांसदीय स्तर पर महिलाओं को आरक्षण दिया जाये तो भारत की महिलाओं को सांसद बनने से कोई नही रोक सकता।

(Bava 2006) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य सहस्त्राब्दी लक्ष्यों (MDGs) के साथ सतत विकास (SDG) हेतु भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिरता का वर्णन है। साथ ही महिला और पुरूषों के मध्य राजनीतिक समानता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वैचारिक और आनुभाविक दोनों पद्धति का प्रयोग किया है। सतत विकास को सामाजिक विज्ञान में प्रमुख अवधारणा के रूप में और शासन में एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया के रूप में माना जाता है। लेखक द्वारा सतत विकास के आदर्शों और सरकारी न्याय,

अंतर्राष्ट्रीय न्याय के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु मानव प्रयासों को दर्शाया है। सतत विकास बहुआयामी अवधारणा है जिसमें सरकार द्वारा स्थायी विकास और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न स्तरों पर किये गये प्रयासों का वर्णन किया है। पर्यावरणीय रूप से आर्थिक विकास राजनीतिक संस्थाओं के योगदान पर आधारित है। जिसमे लेखक का कहना है कि हमे लोकतांत्रिक राजनीति की ओर बढ़ावा देना चाहिए, जो सभी स्तरों पर शासन और विकास की प्रक्रिया में स्वतन्त्रता, समानता, न्याय, मानव के अधिकार को जोडता है। राजनीतिक रूप से सतत विकास विकसित और विकासशील देशों में पुरुषों और महिलाओं के मध्य समानता का वर्णन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक समानता की माँग करते है।

(Kumar 2007) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य भारतीय संदर्भ में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का पता लगाना, और महिला पुरुष के मध्य राजनीतिक सहभागिता का तुलनात्मक आकलन करना है एंव महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का पता लगाना है। लेखक गहन अध्ययन करते हुए कहते है कि, महिला भारत की आबादी का आधा भाग है इसके बावजूद उन्हें कई प्रकार के भेदभाव का सामना करना पडता है, जो महिनाओं को उनके अधिकारो व स्वतन्त्रता से वंचित करते है। लेखक ने विभिन्न देशों के बीच राजनीतिक प्रतिनिधित्व की तुलना करते हुए भारत के परिपेक्ष में स्पष्ट रूप से वर्णन किया है और यह पता लगा है कि महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व सरलता से कर सकती है इसके बावजूद पुरुष महिलाओं को राजनीति से दूर रखने का प्रयास करते है जिससे पुरुषों की प्रधानता सुरक्षित रहे। महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करते हुए लेखक 1952–1998 के मध्य लोकसभा और राज्यसभा में महिला प्रतिनिधित्व को दर्शाते है, जिसमें लोकसभा के लिए 6.0, राज्यसभा के लिए 10.3 और राज्य विधान सभाओं के लिए 4.0 रहा है। वर्तमान समय में यदि देखे तो महिलाएं अपनी स्थिती में धीमी गति से सुधार की ओर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। लेखक का विचार है कि, ग्रामीण महिलाएं विशेष रूप से स्वतन्त्र मतदान नही करती वह पुरुषों के निर्णयों तक ही सीमित रहती है इसका मुख्य कारण राजनीतिक जागरुकता का आभाव है।

(Pandya & Shukla 2008) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य भारतीय चुनाव में महिलाओं की भागीदारी और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सरकार की तरफ से किये गये प्रयासो का विश्लेषण करना है, एंव शिक्षा

को महत्वपूर्ण बताते हुए राजनीति के प्रति महिला जागरुकता को प्रोत्साहित करना है। लेखक द्वितीय स्त्रोतो के माध्यम से विश्लेषण करते है। राष्ट्रवादी आंदोलनो में महिलाओं ने पूर्ण योगदान दिया, इसके बावजूद वर्तमान में महिलाओं की स्थिति द्वितीय स्तर की है। चुनाव आयोग की रिपोर्ट से यह पता चलता है कि लोकसभा मे महिला सदस्य संख्या प्रथम आम चुनाव 1952 में 2.8 प्रतिशत से कम थी, परन्तु 1984 के चुनावों में 8.5 प्रतिशत देखी गयी। लेखक का कहना है कि, महिला राजनेताओं को ज्यादातर समस्याओं का सामना करना पडता है। विशेष रूप से महिलाओं के राजनीति के प्रति जागरुक न होने का सबसे बडा कारण परिवार है, जो राजनीतिक भागीदारी तक पँहुचने से रोकता है, परन्तु भारतीय संविधान में महिलाओं से सम्बन्धित नीति प्रस्तुत की गयी है। जिसका लाभ केवल शिक्षित महिलाएं ही उठा रही है, इसको ध्यान में रखते हुए लेखक शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए राजनीतिक जागरुकता की बात करते है। उनका कहना है कि महिलाओं के निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में सरकार द्वारा सकारात्मक कार्यवाही हुई है, परन्तु लम्बे समय से चले आ रहे भेदभाव को आरक्षण अधिनियम द्वारा समाप्त नही किया जा सकता। जब तक हम महिलाओं के प्रति अपनी मानसिकता को बदल नही लेते तब तक किसी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नही है।

(Mhatre 2009) लेखक का उद्देश्य महाराष्ट्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का पता लगाना है। द्वितीय स्त्रोतो के माध्यम लेखक द्वारा एक अध्ययन किया, और यह पाया कि चुनाव में महिला प्रतियोगी में वृद्धि हुई है। लेकिन, पुरुषों की तुलना में उनका प्रतिशत उत्साहजनक नही है। भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, महिला और बाल विकास विभाग (CEDAW) रिपोर्ट के अनुसार समय–समय पर लोकसभा में महिलाओं की भूमिका को दर्शाया गया है। जैसे 1952 में 16 उम्मीदवारों में से 5 महिला प्रतियोगी सफल हुई, जब कि 2004 में 157 महिला उम्मीदवार में से केवल 12 महिलाएं सफल हुई। 1980 में 49 में से सबसे अधिक 19 महिला उम्मीदवार चुनी गयी। और 1995 में सबसे अधिक महिला उम्मीदवार ने भाग लिया, लेकिन केवल 11 महिलाओं को जीत हासिल हुई। लेखक ने यह भी देखा कि अधिकतर महिला उम्मीदवार निर्दलीय हैं, और राष्ट्रीय दलों द्वारा महिला उम्मीदवारों का प्रतिनिधित्व करना अनिवार्य है।

(Bano 2014) लेखक का उद्देश्य महिलाओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया में सामाजिक, आर्थिक स्थिति के प्रभावों का अध्ययन किया है। लेखक द्वारा साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली अध्ययन विधियों के माध्यम से वाराणसी शहर में रहने वाली महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति और निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी का आकलन किया गया है। अध्ययन के परिणामों से यह पता चलता है की महिलाओं और उनकी जिम्मेदारियां विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित है।

(Chadha 2014) लेखक का उद्देश्य महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से सम्बन्धित है। और भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, और राजनीति में साम्प्रदायिकता को रोकने के लिए महिलाओं को सशक्त करना है तथा लैंगिक समानता और लैंगिक न्याय के मूल्यों को विकसित करने के लिए समाज में जागरुकता लाना है। लेखक द्वारा द्वितीय स्त्रोतों (सरकारी व गैर सरकारी रिपोर्ट, भारतीय संवैधानिक प्रावधान) के माध्यम से विश्लेषण करते हुए स्पष्ट रूप से यह पता लगाया है कि, विकसित देशों कि अपेक्षा विकासशील देशों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। हॉलाकि भारतीय संविधान द्वारा समय–समय पर महिलाओं के लिए अधिनियमों और विभिन्न आयोगो ने लैंगिक समानता के उद्देश्य की प्रप्ति हेतु कई प्रयास किये है, परन्तु वास्तविक रूप से महिलाओं को उचित अधिकार से वंचित रखा गया है। लेखक द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की ऐतिहासिक और वर्तमान राजनीतिक स्थिती को दर्शाया गया है। वैश्विक स्तर पर अधिकतर देशों में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण से संबन्धित कई नियम बनाये गये है। जिन्होंने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की पुष्टि की है और विकास के लक्ष्य के लिए महत्वपूर्ण कानून बनाये गये है। भारत में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार ने विभिन्न कानूनी, सामाजिक और आर्थिक उपायों को अपनाया है। और उनके लिए विशेष प्रावधान प्रदान करके महिलाओं में एक नये आत्मविश्वास जगाने की कोशिश की है, जो पुरुष प्रधान समाज के खिलाफ एक शक्तिशाली क्रान्ति की तरह काम करती है। अध्ययन से यह पता लगा है कि, महिलाओं में शक्ति की कमी है। यदि भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की बात करे तो, महिलाओं को भ्रष्टाचार और केन्द्रीकरण जैसी प्रमुख बांधाओं का सामना करना पडता है और महिलाओं का सम्पूर्ण विकास तभी सम्भव है, जब उन्हे शैक्षिक, आर्थिक, और राजनीतिक स्वतन्त्रता पूरी तरह से प्रदान हो।

(Hoseini 2014) लेखक का उद्देश्य लैंगिक समानता और सतत विकास के तीन आयामों (सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण आयाम) पर ध्यान केंद्रित किया है। और यह आयाम आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित है। लैंगिक समानता को बढावा देने हेतु प्रयासों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत लेख द्वितीय आकडों पर आधारित है। लेखक ने सतत विकास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, जो भविष्य की पीढियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समक्षौता किये बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है। लेखक ने कुछ अध्ययनों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि आर्थिक लैंगिक असमानता दुनिया भर में सामाजिक असमानताओं और पर्यावरणीय पतन (गिरावट) का कारण है। बीजिंग प्लेटफॉर्म फॉर एक्शन में सरकारें महिलाओं और पुरुष के मध्य समानता सामाजिक अधिकारों, न्याय और शांति के लिए आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने रियो 20 सम्मेलन में स्वीकार किया, कि लैंगिक समानता और महिलाओं की भागीदारी सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

(Stockemer 2014) लेखक का उद्देश्य विकसित एंव विकासशील देशों में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व को दर्शाया गया है। और महिलाओं के विधायी प्रतिनिधित्व और इसमें योगदान करने वाले कारकों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। लेखक का मानना है कि विकासशील देशों में महिला प्रतिनिधित्व कम नजर आती है क्यों कि महिलाओं को व्यवहारिक रूप से मान्यता प्रदान नही की जाती। अध्ययन से यह पता चलता है कि महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर विकास का सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है। और विकास महिलाओं के प्रतिनिधित्व के स्तर को निर्धारित करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(Hartmann, Hendrixson & Sasser 2016) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य जनसंख्या पर पुनर्विचार करना है, ताकि सामाजिक रूप से लैंगिक समानता विकसित हो, एंव लैंगिक संबन्धों के विभिन्न आयामों और स्थिरता के बीच की जटिल अंतःक्रियाओं का वर्णन है। लेखक द्वितीय स्त्रोतो के माध्यम से वैश्विक समस्याओं के लिए योगदानकर्ताओं के जटिल अन्तर को समझने के लिए लैंगिक समानता और सतत विकास की जाँच करते है। जनसंख्या नीतियाँ अधिकतर महिलाओं के शरीर पर केंद्रित होती है। उनके स्वास्थ्य, प्रजनन पर प्रत्यक्ष प्रभाव के साथ व्यक्तिगत सामाजिक एकता और अधिकार को अधिक से अधिक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण के नाम पर त्याग किया जाता है, एंव पर्यावरण की चुनौतियों

(औद्योगिक उत्पादन, जनसंख्या और प्रजनन) का विरोध करते हुए लेखक मानव अधिकारों में स्थायी विकास नीतियों का समर्थन करते है।

(Bhatia & Pattani 2017) लेखक का उद्देश्य निर्णय निर्माण में महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों की समीक्षा की है। लेखक द्वारा द्वितीय आकडों का प्रयोग किया गया है। लेखक ने स्पष्ट रूप से भारतीय संविधान एंव भारत सरकार द्वारा लैंगिक असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। स्वतन्त्रता पश्चात् संवैधानिक अधिकार के रूप में लैंगिक समानता का उदय हुआ लेकिन इसके परिणाम स्वरूप महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व पुरुष की तुलना में कम देखने को मिलती है। लेखक द्वारा प्रस्तुत आंकडों से यह पता चलता है कि, पुरुषों की तुलना में महिलाओं की मतदान संख्या में वृद्धि हुई। एंव चुनौती के रूप में यह सामने आया कि पंचायतों में उपस्थित गरीब महिलाओं के साथ वर्ग भेदभाव तथा उच्च वर्ग की महिलाओं को सरपंच के रूप में चुना गया। भारत में पुरुषों और महिलाओं के बीच लैंगिक असमानता, रोजगार, साक्षारता और मजदूरी में भेदभाव विद्यमान है और इन भेदभाव को समाप्त करने के लिए महिला आन्दोलन शुरू किया गया एंव महिला आरक्षण विधेयक, यूनिफॉर्म सिविल कोड जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। भारतीय संविधान में लिखित रूप से लैंगिक असमानताओं को समाप्त तो किया गया है, परन्तु भेदभाव महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए एक बडी बांधा है। लेखक का मानना है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी न होने का एक महत्वपूर्ण कारण परिवार के कर्तव्यों का भार है, तथा भेदभाव और हिंसा को समाप्त करने के लिए महिला संगठनो ने भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करना है।

(Edwords & Stewart 2017) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य वर्तमान में महिलाओं की आर्थिक स्थिति के असमान प्रभावों का विश्लेषण किया है, और लैंगिक असमानता के तीन क्षेत्रों पर बल दिया गया है। प्रथम हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा, दूसरा महिलाओं का प्रतिनिधित्व (राजनीति और निर्णय निर्माण में) तीसरा आर्थिक सशक्तिकरण। लेखक द्वारा घरेलू हिंसा और महिलाओं का समर्थन करने के लिए नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है।

(Lohani & Aburaida 2017) लेखक का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु महिला सशक्तिकरण की व्याख्या की है। द्वितीय स्त्रोतो (रिपोर्टस) के माध्यम से लैंगिक असमानता के मुद्दे को

प्रतिबिंबित किया है। लैंगिक समानता विकसित करने के लिए सतत विकास के तीन आयाम आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरण संरक्षण अत्यधिक आवश्यक है, एंव सतत विकास में लैंगिक समानता के लिए वैश्विक और राष्ट्रीय प्रयासो को भी शामिल किया गया है, जिसमें गरीबी निवारण, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। विशेष रूप से यह पता चलता है कि लैंगिक समानता लाने के लिए सतत विकास के सभी लक्ष्य आपस में एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

(Pathania 2017) लेखक का उद्देश्य साझेदारी और लाभार्थियों के रूप से सतत विकास में महिलाओं के योगदान की अनिवार्यताओं का वर्णन है। सतत विकास का सामान्य लक्ष्य समतामूलक, समतावादी, तथा समावेशी समाज की दिशा में एक कदम है। और द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग करते हुए लेखक द्वारा वर्णात्मक अध्ययन किया गया है। आकृति (Figure) के माध्यम से यह दर्शाया गया है, कि आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण कारक है। सतत विकास के 17 लक्ष्यों का स्पष्ट वर्णन करते हुए लेखक का तर्क है कि केवल लैंगिक समानता (SDG5) ही महिला सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण नही है, बल्कि 17 लक्ष्य महिला सशक्तिकरण के माध्यम से लैंगिक समानता में सहयोग करते है। लेखक द्वारा सतत विकास के लिए गरीबी उन्मूलन को सबसे बडी वैश्विक चुनौती के रूप में स्वीकार किया गया है, साथ ही महिलाओं के समक्ष सतत विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियों को बांधित करते हुए लेखक का कहना है कि महिलाओं के विकास में परिवार, समुदाय और समाज में उनकी भूमिका को उजागर करने के लिए उन परम्पराओं से मुक्त करना होगा, जो महिलाओं को भागीदारी से रोकते है। और सतत विकास हेतु सभी देशों को एक–दूसरे का समर्थन करना चाहिए।

(Das 2018) इस पुस्तक में लेखक का उद्देश्य भारत के संदर्भ में विशेष रूप से महिला, जेंडर, और राजनीति के विषय पर समाज में शक्ति संचालन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है। हम केवल जेंडर को ही समाज के उत्पीड़न को एकमात्र कारक नही माना जा सकता बल्कि कई ऐसे कारक (जाति, वर्ग, उम्र) है जिससे समाज के एक वर्ग का शोषण किया जाता है। लेखक द्वारा द्वितीय स्त्रोतो के माध्यम से गहन अध्ययन किया है। पुस्तक 16 अध्याय में विभाजित है जिसमें महिला और सामाजिक आंदोलन, महिला और राजनीतिक दल, महिला और चुनाव, महिला और राजनीतिक प्रतिनिधित्व, महिला

और सामाजिक नीतियां महत्वपूर्ण विषय शामिल है। सभी अध्याय में महिला और राजनीति के बीच अन्तसम्बन्धों का वर्णन किया है। साथ ही विकसित और विकासशील देशों का तुलनात्मक वर्णन किया है। लेखक का कहना है कि, शक्ति और नियंत्रण का संचालन विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, और संस्कृति, धर्म, परम्पराएं, रीति रिवाज, मूल्य, नैतिकता ऐसे कारण है, जो समाज में लैंगिक असमानता को बढावा देते है। लेखक परम्परागत एंव गैर–परम्परागत जैसे महिला समाज क्षमता, बाल पालन, शिक्षा और स्वास्थ्य, धर्म सुधार, राष्ट्रवाद दोनों रूपों में महिलाओं के राजनीतिक सम्बन्धों पर ध्यान केंद्रित किया है। लेखक के विचार मध्यवर्गीय महिलाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकार पर केंद्रित है।

(Dhiblawe 2018) पुस्तक में लेखक का उद्देश्य सोमालिया में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और निर्णय निर्माण का आंकलन साथ ही यह सुनिश्चित करना की महिलाओं को राजनीतिक और निर्णय लेने में भाग लेने का अधिकार कैसे दिया जाये ? यह अध्ययन प्राथमिक स्त्रोतों पर आधारित है जिसमें (प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार, मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान विधियों का उपयोग किया है)। शोधकर्ता ने यह पाया की सोमालिया में राजनीतिक नेतृत्व और निर्णय लेने में महिलाओं का कोई विचार नही है। लेखक का मानना है कि सरकार को शासन व राजनीति और निर्णय निर्माण में महिला की आवश्यकता तथा जागरूकता के लिए काम करने की आवश्यकता है। पुरुषों को राजनीतिक शक्ति का एहसास करना चाहिए और महिलाओं को देखने का नजरिया बदलना चाहिए। और सरकार को ऐसी गतिविधियों को अपनाना चाहिए जो महिलाओं की राजनीतिक पहल का समर्थन करती है।

(Nisha & Vezhaventhan 2018) लेखक का उद्देश्य अन्य देशों के साथ चुनौतियों एंव सांख्यिकीय आंकडों का वर्णन किया है। महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकारण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। लेखक द्वारा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए महिलाओं के निर्णय लेने की स्थिती का गहन वर्णन किया है। लेखक का कहना है कि देश में राजनीतिक भागीदारी के आंकडों के अनुसार राजनीति में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ रही है, लेकिन बहुत अधिक नही है। साहस के साथ राजनीति में भाग लेने के लिए महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता की आवश्यकता है। समाज में महिलाओं को सुरक्षित करने, और उन्हें आत्म निर्णय लेने के लिए एंव

वास्तविक और स्थायी लोकतंत्र के विकास के लिए राजनीति में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है। इससे न केवल उनके व्यक्तित्व का उत्थान होगा, किन्तु उनके सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण के मार्ग खुलेगें। सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी से समाज की समस्याओं का समाधान होगा।

(Sahu & Yadav 2018) लेखक का उद्देश्य महिलाओं के शिक्षा के स्तर और राजनीतिक भागीदारी के बीच संबन्धों की जाँच की गयी है। राजनीतिक भागीदारी में जैसेः राजनीतिक दल की सदस्यता, चुनाव में मतदान, राजनीतिक पद पर कब्जा इत्यादि। परिणमों से यह पता चला है कि कैमरून के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र की महिलाएं औपचारिक शिक्षा के लिए उजागर है। अध्ययन से यह पता चला है कि महिलाओं की औपचारिक शिक्षा का स्तर जितना अधिक होगा उतना ही अधिक सरकार के सभी स्तरों पर महिला प्रतिनिधित्व बढेगा।

(Trivedi 2018) लेखक का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों में गरीबी, लैंगिक असमानता, जैसी चुनौतियों का वर्णन है एंव सुझाव प्रस्तुत किये है। लेखक ने द्वितीय स्त्रोतों के माध्यम से वर्णात्मक एंव मात्रात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए महत्वपूर्ण पहलुओं (MDG3, SDG5, ODS) का वर्णन किया है। लेखक द्वारा भारत के सन्दर्भ में विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियाँ जैसे मानव विकास, शिक्षा में असमानता, लैंगिक असमानता पर ध्यान केंद्रित किया है। और जनगणना रिपोर्ट 2001 से 2011 के अनुसार भारत में शिक्षा के अनुपात को दर्शाया गया है। जिसमें 2001 में 21 से 24 वर्ष के पुरुषों (11.12) की तुलना में महिलाओं का अनुपात कम (5.95) रहा। इसी के चलते 2011 में पुरुषों के अनुपात (57.99) की तुलना में महिलाओं की शिक्षा अनुपात (59.98) में वृद्धि हुयी। लेखक द्वारा संसद में लैंगिक असमानता का वर्णन करते हुए सन् 2000 में लोकसभा सदस्य 542 में से महिला प्रतिनिधित्व केवल 44 रहा एंव राज्य सभा में 250 में से महिला प्रतिनिधित्व 20 रहा। 2011 की तुलना में यदि 2014 में देखा जाये तो लोकसभा में 65 एंव राज्यसभा में 26 महिला प्रतिनिधित्व रहा। इस रिपोर्ट के अनुसार यह कहा जा सकता है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ रही है, लेकिन बहुत अधिक नही है। लेखक द्वारा राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) की रिपोर्ट के अनुसार 1999 से 2000 और 2004 से 2005 में ग्रामीण और शहरीय महिलाओं के आर्थिक भागीदारी के आकडों की तुलना की है। जिसमें 1999 से 2000 तक ग्रामीण महिलाओं का प्रतिशत 15.09 तथा शहरीय महिलाओं का प्रतिशत 16.61 रहा दूसरी

ओर 2004 से 2005 में ग्रामीण महिलाओं का प्रतिशत 21.39 तथा शहरीय महिलाओं का 19 प्रतिशत रहा। जिससे यह पता चलता है कि शहरीय महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में आगे है। और महिलाओं एंव लडकियों को सशक्त करने के लिए सरकार द्वारा बनायी गयी नीतियों की अत्यधिक आवश्यकता है।

(Dhar 2020) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों तथा विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन है, साथ ही वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से महिलाओं के मानवाधिकारों और लैंगिक समानता के विकास का वर्णन करते है। लेखक द्वारा द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग करते हुए भारत में विशेष रूप से सतत विकास के लक्ष्य में दो प्रमुख क्षेत्र (भारत में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण और भारत में महिलाओं विरूद्ध हिंसा) से सुरक्षा सम्बन्धी प्रयास किये गये है। स्पष्ट रूप से लेखक ने लैंगिक असमानता को समानता में परिवर्तित करने हेतु वैश्विक स्तर पर तीन मुख्य सम्मेलनों जैसे यू एन बीजिंग प्लेटफॉम फॉर एक्शन (BPFA 1995), यू एन मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स (MDGs 2000), सतत विकास लक्ष्य (SDGs) के माध्यम से महिलाओं के आत्म शक्ति को बढावा देने का प्रयास है। यह परिवर्तन तभी सम्भव है, जब लैंगिक असमानताओं साथ ही महिला संगठनों और नीति के कार्यान्वयन में नागरिक समाज को संबोधित करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाये जाये। संयुक्त राष्ट्र की वैश्विक रिपोर्ट में पाया गया कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में तीन गुना अधिक अवैतनिक कार्य करती है। रिपोर्ट से यह भी पाया गया की, भारत में लगभग 120 मिलियन महिलाएं जो कि अनौपचारिक रूप से कार्य करती है। भारत की जनगणना (2011) के आंकडों के अनुसार 149.8 मिलियन महिला कार्यकर्ताओं में से 121.8 मिलियन ग्रामीण व 28 मिलियन शहर में है। भारत की अर्थव्यवस्था औसतन 7 प्रतिशत बढी, परन्तु महिला कार्यकर्ताओं की सहभागिता का आभाव देखा गया।

(Pandey & Kumar 2020) इस अध्याय में लेखक का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों–5 के तहत लक्ष्यों को साकार करने में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों का पता लगाने का प्रयास किया है। लेखक द्वारा द्वितीय स्त्रोतो से प्राप्त वर्णात्मक एंव विश्लेषणात्मक अध्ययन इस विचार पर आधारित है कि महिलाओं को विकास की प्रक्रिया से क्यों वंचित रखा गया है ? विशेष रूप से लैंगिक समानता पर इस पुस्तक में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विभिन्न पहलुओं और आयामों को रेखांकित किया है। पुस्तक को नौ

अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में लैंगिक भेदभाव के मुद्दो का सम्बन्ध सतत विकास की अवधारणा से है। दूसरा अध्याय में लैंगिक असमानता को समझने के लिए असमानता के मूल कारकों पर विचार विमर्श करते है। तीसरा अध्याय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों के रूप में लैंगिक असमानता के विभिन्न मुद्दों को उजागर करते है, जिसमें महिलाओं को विकास से वंचित स्थिति के परिणामों की व्याख्या करते है। चौथे अध्याय लैंगिक असमानता में विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की स्थिति का आकलन करने के लिए उपयोग किये जाने वाले विभिन्न उपायों का वर्णन करते है। और महिलाओं के कल्याण से सम्बन्धित नीतियों एंव कार्यक्रमों में उनके महत्व का मूल्यांकन करते है। पाँचवाँ अध्याय में लेखक ने विकसित तथा विकासशील देशों में महिलाओं की विभिन्न (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक) स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण किया है। छठा अध्याय महिलाओं और सतत विकास का एजेंडा एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उन चुनौतियों को उजागर किया गया है, जो लिंग आधारित भेदभाव समाज और विश्व संचार को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक रूप से पूरी तरह से प्रभावित करती है। सातवें अध्याय में SDG5 और SDGs लक्ष्यों के मध्य अन्तसंबन्धों पर विस्तार से वर्णन और सतत विकास की प्रक्रिया को प्राप्त करने में महिलाओं द्वारा निभाई गयी महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया है। लेखक द्वारा आठवें अध्याय में लैंगिक समानता हेतु लैंगिक असमानता की समस्या के निवारण हेतु विभिन्न रणनीतियों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। अन्त में नौ वें अध्याय में लेखक द्वारा असमानता पर कुछ प्रतिबिंब वर्तमान की निर्णायक चुनौती का वर्णन किया।

समस्या कथन :– भारतीय लोकतन्त्र जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। जहाँ महिलाओं की आबादी 49 प्रतिशत है। इसके बावजूद संसद और राज्य विधान सभाओं में महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है। जब कि स्थानीय शासन में महिलाओं का प्रतिशत अधिक है, क्यों कि उन्हे स्थानीय शासन में आरक्षण प्राप्त है। इसके बावजूद व्यवहार में पृित्तसत्तत्मक समाज होने के कारण उनकी स्थिति अति प्रशंसनीय नही रही है। और स्थानीय शासन में भी महिलाओं के स्थान पर निर्णयकर्ता के रूप में पुरुष सक्रिय भूमिका निभाते है। इतिहास में भी महिलाओं की राजनीतिक, आर्थिक सहभागिता को अनदेखा किया गया है। यही कारण है की भारतीय महिलाएं सक्षम होने के बावजूद पिछडी नजर आती है, जो की एक महत्वपूर्ण समस्या है। सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण का दावा तो किया

जाता है, परन्तु अधिकांशतः घर के मुखिया के तौर पर पुरुष नजर आते है एंव परिवार मे और अन्य सामाजिक निर्णय भी पुरुषों द्वारा लिये जाते है। इसके अतिरिक्त आर्थिक स्तर पर भी सशक्तिकरण का दावा किया जाता है। विश्व स्तरीय आंकड़ो से पता चलता है कि भारत की स्थिति अन्य देशों की अपेक्षा खराब है। यह मुख्य समस्या है और इस समस्या के निवारण के लिये भारतीय महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त करना अति आवश्यक है। महिलाओं के प्रति होने वाली हिन्सा, भारतीय समाज मे व्याप्त रूढिवादिता, भारतीय महिलाओं के विकास के लिए, और सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास के साथ जुड़ा हुआ पहलू तभी सम्भव है जब कि भारतीय महिलाओं को राजनीतिक तौर पर सशक्त किया जाये। सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के निवारण के लिए जब तक महिलाओं की भागीदारी को राजनीतिक रूप से सुनिश्चित नही किया जाये तब तक उन्हें सशक्त करना सम्भव नही है।

अध्ययन के उद्देश्य :– किसी भी शोध की सफलता के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक है। उद्देश्यों के माध्यम से दिशा का निर्धारण कर सकते है। प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य :–

- भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
- 21वीं सदी में राष्ट्रीय राजनीतिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।
- 21वीं सदी में प्रादेशिक राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।
- 21वीं सदी में क्षेत्रीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।
- राजनीति भागीदारी में महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
- भारतीय राजनीति में विद्यमान असन्तुलन को दूर करने के लिए सुझावों व समाधानों का अध्ययन करना।

परिकल्पना :– किसी भी शोध अध्ययन के लिए पहले से ही परिकल्पना सुनिश्चित करनी होती है। ताकि उन परिकल्पनाओं की जाँच अध्ययन के दौरान की जा सके। और यह आवश्यक नही है कि परिकल्पना शत–प्रतिशत सही ही हों। प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख परिकल्पनाएं :–

- भारतीय राजनीति के इतिहास में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की अपेक्षाकृम कम है।

- 21वीं सदी में राष्ट्रीय राजनीतिक निर्णयों में महिलाओं को पुरुषों के अपेक्षाकृत कम अवसर प्रदान किये गये है।
- 21वीं सदी में प्रादेशिक राजनीति में महिलाएं कम सक्रिय नजर आती है।
- 21वीं सदी में क्षेत्रीय राजनीतिक मुद्दों पर महिलाओं में जागरूकता का आभाव है।
- महिलाओं को भारतीय राजनीति में भाग लेने के लिए आर्थिक, सामाजिक एंव राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पडता है।
- राजनीति में विद्यमान असंतुलन को दूर करने के लिए आर्थिक, सामाजिक एंव राजनीतिक बाधाओं को दूर करना आवश्यक है।

शोध पद्धतिः— प्रस्तुत शोध अध्ययन विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धत्ति पर आधारित होगा। शोध पद्धत्ति के अर्न्तगत तथ्यों का संकलन द्वितीयक स्त्रोतो के माध्यम से किया जायेगा।

तथ्य—संकलनः— प्रस्तुत शोध द्वितीय स्त्रोतो पर आधारित होगा। द्वितीय स्त्रोतो के अन्तर्गत प्रमुख रूप से पुस्तकों, पत्रिकाओं, सरकारी व गैर सरकारी दस्तावेजों, लेखों और अन्य प्रकाशित व अप्रकाशित दस्तावेजों और रिपोर्टस का प्रयोग करके तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

अध्ययन का महत्वः— भारतीय समाज में महिलाओं को पूजनीय दर्जा दिये जाने का दावा किया जाता है, लेकिन व्यवहारिक तौर पर हम देखते है कि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है। संविधान ने स्वतन्त्रता के पश्चात् महिलाओं को कई राजनीतिक मौलिक और नागरिक अधिकार प्रदान किये है, परन्तु व्यवहारिक रूप में आजादी के 70 साल बाद भी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में बहुत अधिक सुधार देखने को नही मिलता है। और इसी कारण से वह राजनीतिक में अपनी प्रतिभागिता दर्ज नही कर पाती है। महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक रूप से तभी सशक्त बनाया जा सकता है जब महिलाओं को राजनीतिक अवसर प्रदान हो। यह अध्ययन इसी लिये महत्वपूर्ण है, ताकि भारतीय महिलाओं से सम्बन्धित आरक्षण बिल प्रस्ताव जो लम्बे समय से रूका हुआ है उस पर सरकार द्वारा कदम उठाये जा सके और महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को व्यवहारिक तौर पर बढ़ाने के लिए उन समस्याओं को जानना आवश्यक है जिनके कारण सक्रिय रूप से राजनीति में भागीदारी नही निभा पाती है। इस अध्ययन के माध्यम से महिलाओं के सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाना सरकार के

लिए आसान होगा। और उनकी भागीदारी समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। साथ ही इस अध्ययन के परिणमों से विद्यार्थी भी राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के प्रति जागरूक होगें।

प्रस्तावित अध्याय :–

- प्रस्तावना
- भारतीय राजनीतिक इतिहास में महिलाओं की भागीदारी :

  खण्ड क : स्वतन्त्रता पूर्व

  खण्ड ख : स्वतन्त्रता पश्चात्
- 21वीं सदी में राष्ट्रीय राजनीतिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी
- 21वीं सदी में प्रादेशिक राजनीति में महिलाओं की भागीदारी
- 21वीं सदी में क्षेत्रीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी
- राजनीति भागीदारी में महिलाओं के समक्ष चुनौतियां
- भारतीय राजनीति में विद्यमान असन्तुलन को दूर करने के लिए सुझाव व समाधान
- निष्कर्ष

संदर्भ गन्थ :–

- Annual Report (2014 - 2015). 'Ministry of External Affairs', New Delhi, Pp. 07-28 From https://www.india.gov.in/annual-repoets-minisry-women-and-child-development
- Bava N. (2006). 'Sustainable Development in India', (Edit. Gedeon M. Mudacumura, Desta Mebratu & M.S Hemsul Heque in Book Sustainable Development Policy and Administration,) (CRC) Taylor and Francis Group, Newyork, London (Informa), Pp. 20- 690
- Bhatia H. , Pattani I. (2017). 'Millennium to Sustainable Development Goals: A Review of India's Progress and Challenges', Indian Journal of Economic and Development, Vol. 5, Issue.1, Pp.1-9 From http://52.172.159.94/index.php/ijed/article/viewFile/111055/78001
- CSDS (1999). 'Nayional Election Studies', Delhi: Data Unit, Centre for the Study of Developing Societies, URL from http://www.lokniti.org/national_election_studies.php.

- Chadha A. (2014). ‘Political Participation of Women A Case Study in India’, Ontario International Development Agency (OIDA), International Journal of Sustainable Development, Vol. 07, No. 02, Pp. 91-108 From https://doaj.org/toc/1923-6662?source
- Chopra J.K (1993). ‘Women in the Indian parliament: A Critical Study of Their Role’, Mittal Publications, New Delhi- 110059, Pp. 1-290
- Das P. P. (2018). ‘Women, Gender, and Politics A Reader, Global Publications’, New Delhi, Pp. 1-255.
- Development of Women and Child Development (1988). ‘National Perspective Plan for Women 1988-2000’, New Delhi
- Deshpande, R. (2009). ‘how did women vote in lok sabha election 2009?’, economic and political weekly, vol. 44, issue. 39, Pp. 07-83
- Dhar S. (2020). ‘Gender and Sustainable Development Goals (SDGs)’, (Edit. Govinda, R. & Poornima, M.: INDIA’S SOCIAL SECTOR AND SDGs), Routledge, New York, Pp. 36-43
- Dhiblawe A. M. M. (2018). ‘Women Political Participation and Decision Making in Somalia’, from https://www.researchgate.net/publication/324174880 WOMEN POLITICAL PAERTICPATION AND DECISION MAKING IN SOMALIA
- Edwards, M & Stewart, M (2017). ‘Gender equality’, (Edit. Stewart, M.: Tex, Social Policy and Gender Rethinking Equality and Efficiency, ANU (Press), Pp. 325-348 From https://library.oapen.org/bitstream/id/db0c35a6-e00f-4570-88061427a033c2/641516.pdf# page=351
- Elliott, J. A. (2006). ‘An Introduction to Sustainable Development’, New York: Routledge, Pp. 35-45
- Forbes, G. (1979). ‘Votes for Women: the Demand for Women’s Franchise in India, 1917-1937. (Ed. In Mazumdar, Vina. Symbols of Power: Studies on the Political Status of Women in India), Bombay: Allied Publishers, Pp. 03-23
- Geraint, P. (Ed.) (1972). "Participation in Politics", Manchester University Press, Pp. 28
- Green, F. J & Chambers, W. B. (2006). ‘The Politics of Participation in Sustainable Development Governance’, Tokyo: United Nations University Press, Pp. 6-17

- Goetz M. A. (2003). ‘Women’s Education and Political Participation’, United Nations Educational, Scientific & Cultural Organization, MRT-Pi-23, Pp. 1-18 From https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000146770
- Ghosh, A., Lama, R. (2005). ‘Democratization in Progress: Women and Local Politics in Urban India’, Tulika Books, New Delhi, Pp. 14-158 From https://books.google.co.in/books/about/Democratization in progress.html?id =mEja AAA AM AAJ&redir esc=y
- Hartmann B., Hendrixson A.and Sasser J. (2016). ‘Population, Sustainable Development and Gender Equality’, (Edit. Melissa Leach in book, Gender Equality and Sustainable Development), Routledge, New York, Pp.56-81 From https://books.google.co.in/books?id=jJpGCgAAQBAJ&printsec=frontcover&=population+sustainable+development+and+gender+equality&hl
- Hoseini Naierossadat Daneshvar (2014). ‘Gender Inequality and Sustainable Development’, OIDA International Journal of Sustainable Development, Vol. 7, No. 7, Pp 65-74. From https://sustainabledevelopment.un.org/content/decuments/1900unwomen surveyreport advance 16oct.pdf
- Kumar Arun P. (2007). ‘Political Empowerment of Women’, (Edit. Lakshmipathi Raju, Vankayalapati in Book Women Empowerment Challenges and Strategies), Pegel Publication, New Delhi, Pp. 214-233.
- Kudva, N. (2003). ‘Engineering Election: The Experience of Women in Panchayati Raj in Karnataka’, International Journal of poilitics, culture & society, springer, vol-16,issue 3, Pp-445-463 From https://www.jstor.org/stable/20020176?seq=1
- Kumar, S. (Ed.) (2019). 'Indian Youth and Electoral Politics: An Emerging Engagement, SAGE Publications, India, Pp, ?
- Lohani M., Aburaida L. (2017). ‘Women Empowerment: A Key to Sustainable Development’, Researchgate, Vol.6, Pp. 26-29. From https://www.researchgate.net/publication/324863487 Women empowerment A key to sustainable development

- Macpherson, C.B. (1972). " The Real World of Democracy, Oxford University Press, New York, Pp. 152
- Mahapatra Subhasini, (2001). 'Women and Politics, Rajat Publications', New Delhi, Pp. 1-365
- Meehan, E. (Ed.). (1992). FAMINIST POLITICAL THEORY: AN INTRODUCTION, MACMILLAN, London, Pp. 50- 240
- Milbrath, L. (1965). "Political Participation, Rand Mcnally,Chicago,Pp. 110
- Mhatre M. (2009). 'Women in Electoral Politics: A Case Study of Political Participation in Maharashtra', Centre for the Study of Society and Secularism (CSSS), Pp. 15-144 From https://www.academia.edu/2362396/Women in Electoral Politics
- Mudacumura, G.M & Mebratu. D et.al. (2006). 'Sustainable Development Policy and Administration', New York: Taylor & Francis, Pp. 251, 255
- Mukherjee, G. (1997). 'Unite and Support of One- Third Reservation for Women', National Federation of Indian Women, New Delhi
- Muni, S. D.(1979). 'Women in the Electoral process. A statistical Analysis of the lok sabha Elections', In Mazumdar, Vina (Ed.) Symbols of power: Studies on the Political Status of Women in India, Allied Publishers, Bombay, Pp. 24-50
- Nisha M. A., Vezhaventhan D. (2018). 'Political Empowerment and Participation of Women in India', International Journal of Pure and Applied Mathematics, Vol. 120, No.5, 2018, Pp-4721-4736 From https://acadpubl.eu/hub/2018-120-5/4/386.pdf
- Okin, S. M. (1979). (ed.) Women in Western Political Thought, PRINCETON UNIVERSITY press, New Jersey, Pp. 15-274
- Pandey U. C. & Kumar C. (2020). 'Gender Equality and Employment of Women and Girls', Emerald Publishing, United Kingdom, North America, Japan, India, Malaysia, China, Pp- 15-103 From https://books.emeraldinsight.com/resources/pdfs/chapters/9781789735246-TYPE23-NR2.pdf

- Pandya R., Shukla B. (2008). 'Women In Politics, (Edit. Rameshwari Pandya Women Welfare and Empowerment in India Vision For 21st Century)', New Century Publications, New Delhi, Pp. 564-576
- Parliament of India LOK SABHA HOUSE OF THE PEOPLE, From https://164.100.47.194/loksabha/members/women.aspx
- Parliament of India Rajya Sabha Council Of States, From https://164.100.47.5/Newmembers/Women.aspx#
- Pathania, S. K. (2017). 'Sustainable development goal: gender equality for women's empowerment and humen rights', international journal of research- granthaalayah, vol. 5, issue. 4, Pp. 72-82 From https://granthaalayah.com/Articles/Vol5lss4/08 IJRG17 A04 213.pdf
- Rendell, N. J. (1987). "An Introduction to political thought", Sijwick & Jackson, London, Pp. 175
- Roosa, S. A. (2008). 'Sustainable Development Handbook', Lilburn: The Fairmont press, Pp. 1-4
- Rousseau, J.J. (2018). The Social Contract, MUSAICUM, Pp. – from https://books.google.co.in/books?id=zaiSDwAAQBAJ&printse=frontcover&=according+to+russo
- Sahu K. T., Yadav K. (2018). 'Women's Education and Political Participation', International Journal of Advanced Education and Research, Vol. 3, Issue 6, Pp. 7-65 From https://doi.org/10.22271/educatin.2018.v3.i6.15
- State Election Commission, Uttar Pradesh at https://sec.up.nic.in/site/fonts/CON MEM NP.pdf
- Stockemer D. (2014). 'Women's Descriptive Representation in Developed and Developing Countries', SAGE Journals, Vol.36, Issue. 4, Pp. 393-408 From https://doi.org/10.1177/0192512113513966
- Stewart M. (2017). 'Tax, Social Policy and Gender: Rethinking Equality and Efficiency', ANU Press, Pp 325-345

- Swarup, H. L., Sinha, Ghosh, Chitra (1994). 'Women Political Engagement in India', (Ed. Nilson,B., chowdhury, N., Women and political worldwide), London: Yalo University Press, Pp. 79-361
- Trivedi S.B. (2018). 'Achieving Gender Equality and Women Empowerment in India (SDG-5) Opportunities and Challenges', Multidisciplinary Higher Education, Research, Dynamics & Concepts, Vol. 1, No. 1, Swaranjali Publication, Pp- 221-232. From https://conference.nrjp.co.in/index.php/MHERDC/article/view/42
- The Global Gender Gap Report (2018). 'World Economic Forum', Pp. 03-32 From http://www3.weforum.org/docs/WEF GGGR 2018.pdf
- Vissandjee, B., Abdool, shelly, Sophie, (2006), 'Women Political Participation in Rural India: Discerning Discrepancies through a Gender Lens', Indian Journal of Gender Studies, SAGE, vol. 13, Issue. 3, Pp. 50- 425